International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

सदरुदीन मेवाती : एक ऐतिहासिक अध्ययन

शर्मिला यादव
शोध छात्रा, इतिहास विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

शोध आलेख सारः

प्रस्तुत शोध लेख में 1857 के विद्रोह में हयिाणा के मेवात क्षेत्रा से मेवों के योगदान को दर्शाया गया है और विद्रोह के समय मेवों के जन नेता सदरु**दी**न मेवाती के नेतृत्व का विस्तार से वर्णन किया गया है। 1857 के विद्रोह को अधिकांश भारत के महत्वकांक्षी शासकों का नेतृत्व प्राप्त हुआ। उस समय हरियाणा के मेवात क्षेत्रा में यह विद्रोह एक जन विद्रोह के रूप में उभर कर सामने आया और मेवों ने अंग्रेजों के सामने एक कड़ी चुनौती पेश की क्योंकि विद्रोह के समय मेवों का नेतृत्व किसी राजा या महाराजा ने नहीं किया बल्कि आम जनता में से ही मेवों के कस्बों से नेता उभर कर सामने आये, जिन में सदरु**दी**न मेवाती के नेतृत्व का मेवात के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इन्होने संगठित होकर अंग्रेजों को अपने देश से निकालने के लिए कड़ी लड़ाई लड़ी। प्रस्तुत शोध लेख मेवात में विद्रोह इन्ही के योगदान से सम्बधित है।

भूमिका

1857 का विद्रोह भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसे याद कर आज प्रत्येक भारतीय गर्व महसूस करता है वैसे अगर हम देखे तो 1857 का विद्रोह एक बहु–आयामी विषय है। इस पर चाहे कितना भी लिखा जाये, फ्रिफर भी बहुत कुछ अनकहा रह ही जाता है और इतिहास इस बात का गवाह है कि अच्छा नेतृत्व किसी भी संगठन के लिए क्षेत्रीय विद्रोह या राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए कितना महत्त्व रखता है। इस प्रकार 1857 के विद्रोह के नेतृत्वकर्ताओं में हमें बहादुरशाह–प्प्, नाना साहब, लक्ष्मीबाई इत्यादि के बारे में तो इतिहास में वर्णन मिलता है जैसे डॉद्व कालीकिध दत्त ने अपनी पुस्तक ''कुट्टवर सिंह अमर शहीद'' में इस जन नेता के बारे में अध्ययन किया। इसी प्रकार केद्व एलद्व जौहर ने ''स्वतन्त्राता संग्राम के अमर शहीद'' नामक पुस्तक में तात्या टोपे, लक्ष्मीबाई इत्यादि का वर्णन किया है इसी प्रकार हरियाणा में रावतुलाराम पर डॉद्व केद्वसीद्व यादव ने और डॉद्व गोपाल एसद्व सांगवान ने अपनी पुस्तक ''1857 राव तुलाराम दा हिरो ऑफ्रफ यादव डायनस्ट्री'' में विस्तार से उन के जीवन के बारे में वर्णन किया है। इसी तरह अगर हम देखे तो मेवात ;हरियाणाद्ध क्षेत्रा में भी सदरु**दी**न मेवाती का 1857 में विशेष योगदान था परन्तु उन के बारे में कोई–कोई ही जानता है। वैसे भी मेवातीयों के इतिहास को इतिहासकार अनदेखा करते रहे है। इस शोध लेख में सदरु**दी**न मेवाती के बारे में वर्णन करने का प्रयास किया जायेगा।

International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

हरियाणा में विद्रोह के नेतृत्वकर्त्ता

1857 के विद्रोह के समय हरियाणा की जनता इस बात में भाग्यशाली थी कि उन्हें अपने क्षेत्रों में अच्छे जन नेताओं का नेतृत्व प्राप्त हुआ। हरियाणा में रेवाड़ी में रावतुलाराम, गोपाल देव, हिसार में मुहम्मद आजिम, झज्जर में अब्दुस्समद खान, सिरसा में समद खान, पानीपत में इमाम कल्दर और बल्लभगढ़ के नाहर सिंह इत्यादि ने इस विद्रोह में जनता को अच्छे से संगठित किया और अंग्रेजों को कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ा।

मेवात में विद्रोह के जननायक

मेवात क्षेत्रा राजधानी दिल्ली के दक्षिण में स्थित है यह इलाका मेवों का है और मेव जाति हमेशा अपनी बहादुरी के कारण जानी जाती है। इस विद्रोह के समय तो इनकी बहादुरी की बातें खुद अंग्रेज अधिकारियों के मुंह से सुनी जा सकती थी। मेवात में इस विद्रोह का नेतृत्व किसी राजा या महाराजा ने नहीं किया बल्कि इन्हीं में से किसान व्यक्ति जन नायक के रूप में उभरे और विद्रोह की बागडोर सम्भाली। यहां पर सदरु**दी**न मेवाती की अहम् भूमिका रही जिसे आगे उजागर किया जायेगा। इसके नेतृत्व में मेवातीयों ने दिखा दिया कि वे किसी के अत्याचारों को किसी हालत में सहन नहीं करेंगे। इनकी बहादुरी को राष्ट्रपति महात्मा गांधी ने चम्पारन कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर बहुत ही सटीक शब्दों में मेवों की अहमियत को रेखांकित करते हुए कहा था – ''अगर हर भारतीय मेव बन जाये तो ये मुल्क एक दिन में आजाद हो जायेगा।''[1]

सदरु**दी**न मेवाती का योगदान

सदरु**दी**न मेवाती की गणना सन् 1857 में मेवात क्षेत्रा के संघर्ष में अग्रणी जन नायकों में की जाती है। इन के प्रारम्भिक जीवन की सीमित जानकारी के अनुसार ये पिनगंवा गाट्टव के रहने वाले थे। ये पेशे से कृषक थे। इन्होंने दिल्ली व गुडगांव पर क्रान्तिकारियों के अधिकार के पश्चात् मेवातियों को संगठित किया तथा अपना उद्देश्य उनके सामने रखा।[2] कि हमें इन अंग्रेजों को अपने मुल्क से बाहर निकाल देना है।

मेरठ, अम्बाला, दिल्ली में इस जंगे आजादी की खबर जैसे ही मेवात पहुंची, मेवातियों ने अंग्रेजों के विरु(हथियार उठा लिए और 13 मई को मेरठ से आये क्रान्तिकारियों ने जैसे ही गुड़गांव पर हमला किया वैसे ही समस्त मेवाती सदरु**दी**न के नेतृत्व में संगठित होकर उठ खड़े हुए। मेवात की जनता को अच्छे जन–नायकों का नेतृत्व प्राप्त हुआ। फ्रिफरोजपुर झिरका, दौहा, रावली में सआदत खां, नूंह, तिगावाट्ट, पिनगंवा में सदरु**दी**न और सोहना, तावडू, रायसीना क्षेत्रा में फ्रिफरोजशाह मेवाती ने विद्रोह की बागडोर अपने हाथ में ले ली। मेहराब खां इन का धार्मिक नेता था जिस ने अंग्रेजों के विरु(जेहाद का नारा दिया। इस प्रकार जनता अंग्रेजों के विरु(खड़ी हो गई। इन में सदरु**दी**न की अहम् भूमिका मानी जाती है।

International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

ऊंचे कद का, खूबसूरत सदरु**दी**न पिनगंवा का रहने वाला था। वह एक चतुर एवं बुि(मान व्यक्ति था, जिसने अपना काम पूरी गम्भीरता के साथ अंजाम दिया था।[3]सदरु**दी**न ने मेवाती किसानों को संगठित करके पिनगंवा पर हमला बोला। सदरु**दी**न और उसके सहयोगियों ने ये भली–भांति समझ लिया था कि जब तक अंग्रेजों के वफ़्रफादार भारतीयों की कमर न तोड़ी जायेगी तब तक मेवात को पूर्ण रुप से स्वतन्त्रा नहीं कराया जा सकता। इसी लिए उसने अंग्रेजों के वफ़्रफादार होडल के रावत जाटों, हथीन के राजपूतों और नूंह के खानजादों के विरु(मुहिम छेड़ दी।[4] सदरु**दी**न ने नगली और अलवर के मेवों को लेकर उन पर हमला किया कुछ दिन संघर्ष चला लेकिन खानजादे भाग गए।[5] नूंह के खानजादों के बाद होडल के साथ वाले गांव के रावत जाट और हथीन के राजपूतों जिनको सरकार का समर्थक माना जाता था पर होडल के सूरोत जाटों, सोली के पठानों, मेवों ने इन पर आक्रमण कर दिया। लड़ाई कुछ दिन तक चलती रही तथा अंग्रेज सहायकों को भारी नुकसान उठाना पड़ा।[6] इस प्रकार सदरु**दी**न ने अपना कार्य बड़े ही संगठित रूप से किया।

सदरु**दी**न ने 2 अक्टूबर 1857 को अंग्रेजों से संघर्ष शुरू हुआ। 13 अक्टूबर 1857 को असिस्टेंट कलेक्टर क्लिफ़्रफोर्ड इस संघर्ष में मारा गया इससे सदरु**दी**न व उसके साथियों का उत्साह बढ़ गया।[7] अंग्रेज अधिकारी लेफ़्रिटनेंट रागंटन जो मेवात को शान्त करने के लिए भेजा गया था को सूचना मिली कि सदरु**दी**न व उसके साथी घासेड़ा में है। परन्तु उन्हें सदरु**दी**न वहां नहीं मिला यहां पर संघर्ष हुआ और काफ़्रफी मेव मारे गये। मगर दिल्ली के पतन के बाद विद्रोही सेना बिखर सी गई, इससे अंग्रेजों की शक्ति और उत्साह बढ़ गया था। परन्तु मेवाती अभी भी पूरे जोश से लड़ रहे थे उनके अन्दर अंग्रेजों के विरु(गहरा असन्तोष था। इनके जन नायक नेता सदरु**दी**न ने पिनगंवा में मोर्चा लगाया। क्योंकि यहां पर मोर्चा लगा कर वह अंग्रेज सहायकों को नियन्त्राण में रखना चाहता था। अंग्रेजों ने नवम्बर में सही तरीके से सदरु**दी**न की तरफ़्रफ ध्यान लगाया अंग्रेजों की ओर से कैप्टन रामसे की कमान में एक सेना भेजी गयी। यह सेना का दस्ता रूपडाका में कैप्टन ड्रमण्ड से मिल गया। इनका उद्देश्य सदरु**दी**न व उसके साथियों को मात देना था।

उधर सदरु**दी**न को जब पता चला कि रूपडाका को तबाह व बर्बाद कर ये दोनों अंग्रेज दस्ते मिल गये है और पिनगंवा की ओर बढ़ रहे है, उसे सन्देह हुआ कि अंग्रेजों को यह सूचना देने की पिनगंवा के खानजादों की ही शरारत हो सकती है। 27 नवम्बर 1857 को गुड़गांव सूचना पहुंची कि मेव नेता सदरु**दी**न ने पिनगंवा पर आक्रमण कर दिया है। उसी दिन मैलकम एक सैनिक दस्ते के साथ गुड़गांव से रवाना हो गया। 28 नवम्बर को सुबह चार बजे सैनिक दस्ता हथीन पहुंचा। हथीन से सैनिक दस्ता शाम के 8 बजे रवाना होकर 29 नवम्बर की सुबह 3 बजे पिनगंवा पहुंचा। यहां सूचना मिली कि मेव माहुन गांव में है। मैलकम सैनिक दस्ते के साथ 29 नवम्बर की सुबह 7 बजे माहुन गांव पहुंच गया।[8] यहाट्ट पर सदरु**दी**न ने अपनी अन्तिम लड़ाई लड़ी और यहां पर जबरदस्त किलेबन्दी कर दी।

International Journal of Research
Special Issue for Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

माहुन ;मट्टहूद्ध गांव पर ब्रिटिश सेना ने तोपों के साथ आक्रमण किया जैसे ही ब्रिटिश सेना गांव से 150 गज की दूरी पर पहुंची। मेवातियों ने धुट्टआधार गोलियाट्ट चलानी शुरू कर दी। ब्रिटिश सेना को तुरन्त पीछे हटना पड़ा। मैलकम ने फ्रिफरोजपुर के तहसीलदार को तुरन्त कैप्टन रामसे के पास सैनिक सहायता के लिए भेजी। उधर कैप्टन ऑर्चर्ड ब्रिटिश सेना के साथ चार सौ गज पीछे हटा। ऐसा इसलिए किया गया जिससे विद्रोही मेवाती गांव से बाहर निकलकर आये। दोपहर तक छुटपुट लड़ाई होती रही। दोपहर बाद मेवातियों का सब्र टूट गया और उन्होंने गांव के बाहर आकर लड़ना शुरु कर दिया।[9] ब्रिटिश फ्रफौजों ने इस गांव पर गोलों की बौछार कर दी और गांव के तीन ओर से गोरखा रेजीमेन्टों ने चढाई कर दी। आखिर में अंग्रेजों ने 28 मेवों, जिनमें सदरु**दी**न का बेटा भी था, को काट डाला और अन्य 42 व्यक्तियों को जो पड़ोसी गांवों के थे मार डाला।[10]

सदरु**दी**न अपने शेष साथियों के साथ, पहाड़ पार कर राजस्थान की ओर चला गया। इसके पश्चात् इस महान, मेव स्वतन्त्राता सेनानी का कुछ पता नहीं चला। मगर माहुन की घाटी में आज भी इस वीर सेनानी की जंगी हुंकार गूंज रही है, जो प्रत्येक मेवाती के लिए संघर्ष की प्रेरणा देती है।[11] मेवाती लोगों में आज भी एक लोकगीत प्रसि(है जो इस प्रकार है –

''सदरु बढयो नौ मे आयो, वीर हुआ लबरेज
रायसीना का गौर में देखा, बिना शीश अंग्रेज
जोड गहाटो बाड खुदाई, छीन लिया हथियार।''[12]

इसी तरह अंग्रेज अधिकारी मेकफ्रफरसन ने इस यु(से प्रभावित होकर अपनी डायरी में ठीक ही लिखा – ''बागियों की संख्या इतनी कम थी कि उनका प्रतिरोध मेरे लिए सबसे बड़ा अजूबा था।''[13] इस प्रकार माहुन गांव की लड़ाई सदरु**दी**न के लिए अन्तिम संघर्ष साबित हुई। आज मेव इस लड़ाई के लिए गर्व से गाते है –

''म्हारो माहुन तिगांवा गाम जहां को वीर लड़ाका
काट दियो अंग्रेज लिखो गयो नाम सुलाखा।।''[14]

निष्कर्ष

इस प्रकार उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट होता है कि इस स्वतन्त्राता संघर्ष में मेवातियों को सदरु**दी**न जैसे महान जननायक का नेतृत्व मिला उसने भी अंग्रेजों को कई बार कड़ी चुनौतियाट्ट दी परन्तु मेवातीयों के पास जोश था, सहास था परन्तु उनके पास अंग्रेजों जैसे अच्छे हथियार नहीं थे इसलिए वे कब तक लड़ते आखिरकार उकनी हार हुई परन्तु वे अंग्रेजों के सामने झुके नहीं अपनी शहादत से अपने वतन की मिट्टी को रंग दिया।

पाद टिप्पणी:

[1] कुमार खण्डेवाल कृष्ण व अन्य, *हरियाणा एन्साइक्लोपिडिया,* भाग–4, इतिहास भाग–1, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृद्ध 85

[2] *मेव दर्पण* ;मासिक पत्रिकाद्ध, सआदत खान मेवाती और उसके जाबांज साथी, इन्दौर, 1 अक्टूबर 2011, क्रांति विशेषांक, पृद्ध 54

[3] अहमद मेव सि(कि, *संग्राम 1857 : मेवातियों का योगदान मेवात साहित्य अकादमी,* दिल्ली, 2006, पृद्ध 111

[4] सिंह नमिता व अन्य, *1857 और जनप्रतिरोध,* नवचेतना प्रकाशन, दिल्ली, 2008, पृद्ध 267

[5] नाथ धर्मेन्द्र, *1857 का मुक्ति संग्राम,* राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2011, पृद्ध 252

[6] हरियाणा जिला गजेटियर, गुडगांव, पृद्ध 61

[7] अहमद मेव सि(कि, पूर्वोक्त, पृद्ध 112

[8] कुमार खण्डेवाल कृष्ण, इतिहास भाग–2, पूर्वोक्त, पृद्ध 358

[9] वही, पृद्ध 258–259

[10] जाखड़, रामसिंह, *1857 की जनक्रांति में हरियाणा का योगदान,* अभिलेखागार विभाग, चण्डीगढ़, 1999, पृद्ध 24

[11] अहमद मेव सि(कि, पूर्वोक्त, पृद्ध 113

[12] कुमार खण्डेवाल कृष्ण, इतिहास भाग–2, पूर्वोक्त, पृद्ध 379

[13] मेव दर्पण, पूर्वोक्त, पृद्ध 58

[14] नाथ धर्मेन्द्र, पूर्वोक्त, पृद्ध 254